RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary 2021; 6(2):116-118
ISSN: 2455-3085 (Online)
https://doi.org/10.31305/rrijm.2021.v06.i02.020
Research Paper
Double Blind Peer Reviewed/Refereed Journal
https://www.rrjournals.com/

राहुल सांकृत्यायन यादों के झरोखें से "विस्मृत यात्री"

*मंजुला चतुर्वेदी

बी.ए., एम.ए. (हिंदी साहित्य), अध्यक्ष, यश मंजुलम सेवा ट्रस्ट, अहमदाबाद
पी.एच.डी. शोध छात्रा ओ.पी.जे.एस. यूनिवर्सिटी, चुरू, राजस्थान

ABSTRACT

राहुल जी ने अपना पूरा जीवन अपनी यात्राओं को समर्पित किया, उन्हें अपनी विविध यात्राओ में विविध प्रकार के लोगों से मिलने का अवसर मिलता था, उस अवसर को उन्होंने पूर्णतः आत्मसात किया। वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के मध्य अपने कई मित्र बना लेते थे, इसके कारण उन्हें उस स्थान का पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता था – जिसमें उनका मुख्य लक्ष्य होता था, वहां की आम भाषाको सीखना, वहां के लोगो के साथ मित्रवत् हो जाना, और जो सबसे महत्वपूर्ण था, वह यह की अच्छाईयों और सभ्यता को आत्मसात करना। राहुल जी ने अपने स्वयं के जीवन में काफी संघर्ष किया, किन्तु यह संघर्ष उनके मनोबल को और मजबूती प्रदान करता था। यह शोध पत्र राहुलजी की अनेक यात्राओ में से ही एक यात्रा को समर्पित है, जहां उन्होनें स्वयं के समान ही एक अन्य व्यक्तित्व का वर्णन किया है। जहाँ "वोल्गा से गंगा" में इन्होंने "वोल्गा तट से लेकर गंगा तक की संस्कृति को दर्शाया है, वहीं इनकी पुस्तक" विस्मृत यात्री "में राहुलजी ने वर्षो पूर्व की संस्कृति को उजागर करते हुए एक व्यक्ति विशेष के सत्य घटना को हम सभी के समक्ष रखा है।".

Keywords: *कपिशा (काबुल), संघाराम, सुवास्तु (स्वात) नदी जम्बुदीप (प्राचीन भारत), प्रव्रज्या (साधु), चक्रमण (चहल कदमी)*

Article Publication

Published Online: 14-Feb-2021

***Author's Correspondence**

मंजुला चतुर्वेदी

पी.एच.डी. शोध छात्रा ओ.पी.जे.एस. यूनिवर्सिटी, चुरू, राजस्थान

✉ manjulaspathak[at]gmail.com

© 2021The Authors. Published by *Research Review Journals*

This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

परिचय (Instruction)

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी साहित्य को एक नयी दिशा दी। कहानी और कविताओं की अतिरिक्त राहुल जी ने यात्रा को भी साहित्य की श्रेणी में लाकर आगे बढाया। राहुल जी का जन्म 9 अप्रैल 1893 ई. में उत्तर प्रदेश के पंदरा नामक गांव में हुआ था, उनका पालन पोषण इनके ननिहाल में नाना-नानी के पास हुआ, उनकी माता का इनके बचपन में ही स्वर्गवास हो गया था। इनका बचपन का नाम केदार पांडे था। प्रारम्भिक शिक्षा के लिए राहुल मदरसे जाते थे, अपने बचपन में ही हुए बाल विवाह से केदार बहुत दुःखी थे, और विवाह के बाद उन्होंने घर त्याग दिया, और एक आश्रम में जाकर साधु हो गए, वहां उन्हे नाम मिला 'राम उदार'। फिर यहीं से उनके जीवन का नया सफर आरम्भ हुआ और बाद में उन्होंने बौद्ध धर्म का पालन करते हुए उसे अपनाया तब केदार पांडे वास्तव में राहुल साकृत्यायन हो गए, सांकृत्य इनका गौत्र होने के कारण उपनाम सांकृत्यायन कहलाया।

राहुल जी ने अपना समस्त जीवन घुम्मकडी में एवं साहित्य के विस्तार में बिताया। उन्होंने अपने बचपन में सुने उन शब्दों को पूर्ण चारितार्थ किया।

सैर कर दुनिया की गाफिल
जिन्दगानी फिर कहाँ।
जिन्दगानी गर रही तो,
नौजवानी फिर कहाँ।

राहुल जी ने घुम्मकड़ी के साथ ही विभिन्न भाषा, साहित्य एवं प्राचीन संस्कृत-पालि-प्राकृत-अपभ्रंश आदि भाषाओं पर अध्ययन मनन करके इन्हे पूर्णतः आत्मसात् कर लिया। वास्तव में उनके साहित्यक जीवन का आरम्भ 1927 ई. से माना जाता है, जैसी राहुलजी में घुमने की ललक थी, ठीक वैसे ही उनमें यात्रा साहित्य को शब्द में पिरोने का जूनुन था। विभिन्न प्रकार के विषयों पर उन्होंने लगभग 150 ग्रंथो का प्रणयन किया, उनमें से लगभग 130 ग्रंथ प्रकाशित हो चुके है।

इनके साहित्य में विविध पक्ष देखने को मिलते है। उन्होंने भारतीय भाषाओं के साथ-साथ तिब्बती, सिंहली, अंग्रेजी, चीनी, रुसी, जापानी आदि भाषाओं पर भी अपना प्रभुत्व बनाया।

साहित्यिक जीवन :

राहुल जी का सम्पूर्ण साहित्यक जीवन घुम्मकड़ी पर विशेष तौर पर आधारित था।। इसका प्रमुख प्रमाण हमें "वोल्गा से गंगा" में मिलता है। राहुल जी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न थे, धर्म, दर्शन, लोकशाही, यात्रा साहित्य, इतिहास, राजनिति, जीवनी कोश एवं प्राचीन तालपोथियों का सम्पादन आदि कार्य किया। राहुल जी ने प्राचीन खण्डरों से भी साहित्य को ढूढकर निकाला, यह उनको रचनाओं में प्राचीन के प्रति आस्था और वर्तमान के प्रति सधी हुई दृष्टि को मखरित करता है। राहुल जी को कृति "विस्मृत यात्री" एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। इसका सबसे महत्वपूर्ण पहलुं यह है कि यह उपन्यास एक सत्य पर आधारित है। इसका पात्र नरेन्द्र यश काल्पनिक नहीं अपितु वास्तविक है। इस उपन्यास को पढ़कर राहुल जी का गंगा नदी आदि से लगाव दिखाई देता है। जिस प्रकार "वोल्गा से गंगा" में आरम्भ से अंत तक नदियों का साथ रहा, उसी प्रकार "विस्मृत यात्री" में भी सुवास्तु (स्वात) नदी शामिल है।

"विस्मृत यात्री" उपन्यास में राहुलजी ने एक आम पारिवारिक मनुष्य को बौद्ध भिक्षु तक और आगे उनकी सम्पूर्ण जीवन यात्रा, जीवन संध्या तक का विस्तार वर्णन किया है। साथी ही कपिसा (काबुल) जो तत्कालीन जम्बु द्वीप (भारत) का हिस्सा था, (उसका इतिहास एवं प्राचीनता का वर्णन शायद ही कहीं देखने को मिले) उसका दर्शन करवाया।

विस्मृत यात्री के अनुसार नरेन्द्रयश। यश एक भारतीय थे, और राहुलजी के समान ही धुम्मकड़ी प्रवृत्ति उनके अन्दर भी थी। इनका समय काल 518 ई. से 589 ई. तक का था।

नरेन्द्रयश भी राहुलजी के समान एक महान घुम्मकड़ थे। उनके बारे में राहुलजी ने अपनी चीन यात्रा के दौरान मिले लोगों से जाना। उ. पा. चाउ नामक एक व्यक्ति ने राहुलजी को, नरेन्द्र यश के सम्पूर्ण जीवन वृत्ति को साक्षों के साथ अवगत करवाया। जिससे राहल सांकृत्यायन ने अपने शब्द और लेखनो द्वारा सारे विश्व तक पहुंचाया।

इस उपन्यास से हमें तत्कालीन सभ्यता का पता चलता है। नरेन्द्रयश की जीवन यात्रा का प्रथम चरण जो बाल्यावस्था से प्रवज्या (साधु) बनने के लिए उत्साहित था, उनमें ज्ञान प्राप्त करने की एक ललक थी। परन्तु युवावस्था के साथ ही संसार की लिप्तता बढ़ गई। वही उसके जीवन काल में ऐसे मोड़ आया कि वह संसार त्याग प्रवज्या की तरफ मुड़ गया। रहुलजी के अनुसार – नरेन्द्र यश ने अपने जीवन में पठन-पाठन एवं घुम्मक्कडी को प्राथमिकता दी यही यायावरी प्रवृत्ति का स्वभाव नरेन्द्र यश को प्रवज्या की तरफ लेकर गया। "विस्मृत यात्री" में नरेन्द्र की सम्पूर्ण जीवन जीवनी के साथ साथ तत्कालिन सभ्यता एवं इतिहास की जानकारी मिलती है। साथ ही तात्कालिन समाज की स्वतंत्र विचारधारा को मुख्य रुप से रेखांकित किया गया हे ; 'विस्मृत यात्री' के अध्ययन से व्यक्ति को समय के अनुसार ज्यादा बदलाव नही दिखाई देता। सभ्यता एवं सोच दोनो आज के परिवेष

में भी अपनी झलक देती है। राहुल जी ने नरेन्द्र यश के रुप में एक सम्पूर्ण बौद्ध जीवन की परतों को निकालने का प्रयास किया है। "विस्मृत यात्री" के द्वारा हम समझ सकते है कि आखिर राहुल सांक्त्ययान बौद्ध धर्म की तरह मुड़ने को क्यों आकर्षित हुए। बौद्ध भिक्षुओं में विद्या ज्ञान, चिकित्सा शास्त्र ज्ञान के साथ – साथ घुम्मकडी द्वारा सम्पूर्ण संसार का ज्ञान अर्जित करने की परम्परा भिक्षु के रुप में अधिक स्वतंत्र थी।

यही कारण है, जो राहुल सांकृत्यायन ने बौद्ध धर्म अपनाया, और अपने यायावरी स्वभाव के कारण अपनी कई यात्राओं से विभिन्न स्थानों की साहित्यिक , सांस्कृतिक और पारम्परिक विरासत को साहित्य के द्वारा सम्पूण विश्व तक पहुंचाया।

निष्कर्ष -

'विस्मृत यात्री' राहुल सांस्कृत्यायान द्वारा रचित एक सत्य घटना क्रम है, जिसका मुख्य पात्र नरेन्द्र यश नामक व्यक्ति है। जिसने पश्चिमी पाकिस्तान के स्वात की भूमि से लेकर भारत सिंहल, मध्य एशिया एवं चीन की तात्कालिन सांस्कृतिक सभ्यता से परिचय करवाया।

राहुल जी के अनुसार – अगर घुम्मकडी प्रवर्ती न हो तो ऐसा मनुष्य उस वृक्ष के समान है, जो एक ही इंसान पर अपना सम्पूर्ण जीवन पूर्ण करता है, अर्थात् एक स्थान से दूसरे स्थान पर व्यक्ति अकेला नही जाता, वह अपने साथ संस्कृति एवं सभ्यता को विरासत को भी लेकर जाता है। इस प्रकार लोक एक दूसरे के आचार-व्यवहार से भी परिचित होते है। यही राहुल जी को पुस्तक 'विस्मृत यात्री का भी उद्देश्य है।

संदर्भ –

1. 'वोल्गा से गंगा' – राहुल सांकृत्यायन
2. 'विस्मृत यात्री' – राहुल सांकृत्यायन